ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research e-Journal

मोक्ष प्राप्ति के मार्ग का महत्वपूर्ण योगदान

डॉ. धर्मिष्ठा ऐच गोहिल

विभाग: तत्वज्ञान

श्री ऐच के आर्ट्स कॉलेज, अहमदाबाद.

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research e-Journal

मोक्ष प्राप्ति के मार्ग का महत्वपूर्ण योगदान

➢ भूमिका

भारतीय प्राचिन नितियों में मोक्ष प्रप्ति के साधन का महत्व पूर्ण योगदान है मनुष्यका शुभ-अशुभ कर्म मन, वाणी, शरीर से उत्पन्न होता है और इसी से उसको उतम, मध्यम और अधर्म योनिया प्राप्त होती है। वाणी का दण्ड, मन का दण्ड, शरीर का दण्ड जिसकी बुद्धि में स्थित है उसे त्रिदंडी कहते है। मनुष्य इन तिन दण्डो को सब जीवो के विषय में लगाकर कर्म, क्रोध को रोक कर सिद्धियॉ प्राप्त करता है। जब विषयासक्ति से उत्पन्न हुए दुःख फल वाले पापो को भोगकर उसके बाद पाप से छुटता है और पूण्य को प्राप्त करता है। पूण्य और पाप दोनों से युक्त मनुष्य इस लोक परलोक में सुख-दुःख प्राप्त करके परमात्मा के साथ सबंध बांधता है। मनुष्य को धर्म और अधर्म से प्राप्त गतियो को अपने चित्त में देखकर मन को सदा धर्मे में लगाना चहिए यह शौच बताई गई है। मनुष्य सत्व, रजस, तमस, तिन गुणों के कारण कर्म करता है उसी प्रकार विभिन्न योनियों में जन्म धारण करना पड़ता है। मोक्ष प्राप्ति की नरक गति, तिर्यंच गति, मनुष्य गति और देव गतियह चारों गतियों से अर्थात ८४लाख योनियों से छुटकारा पाकर ही जीव मोक्ष प्राप्ति कर सकता है अन्यथा नहीं। परन्तु प्रत्येक जीव की स्व कर्मानुसार विभिन्न गति होती है, यही कर्मविपाक का सर्वतंत्र सिद्धांत हैवेद का अभ्यास तप, ज्ञान, इन्द्रिय संयम, अहिंसक और गुरु सेवा -यह उत्तम मोक्ष साधन है। इन सब में से कोई भी शुभ कर्म करे, बहुत ही कल्याणकारी होता है।**शास्त्रकारों ने मोक्ष प्राप्त करने के दस साधन बताए हैं**मौन, ब्रह्मचर्य व्रत, शास्त्र श्रवण, तप, अध्ययन, स्वधर्म पालन, शास्त्रों की व्याख्या, एकान्तवास, जप, समाधि आदि की विचारणा की गई है।

भारतीय दर्शन में मोक्ष प्राप्तिकी विचारणा प्राय: सभी दार्शनिक प्रणालियों ने संसार के दु:ख मय स्वभाव को स्वीकार किया है और इससे मुक्त होने के लिये कर्ममार्ग या ज्ञानमार्ग का रास्ता अपनाया है। मोक्ष इस तरह के जीवन की अंतिम परिणति है। इसे पारपार्थिक मूल्य मानकर जीवन के परम उद्देश्य के रूप में स्वीकार किया गया है। मनुष्य का परमात्मा के साथ सबंध सूक्ष्म शरीर जन्म-मृत्यु के चक्र में उलझा रहता है और मोक्ष की अवस्था में आत्मा इससे बंधन तोड़कर परमात्मा में विलीन हो जाती है। परमात्मा ही सबसे बड़ा देवता है, सब उसी में स्थित है, वह वही सब देह धारियों के लिए कर्म भोग की रचना करता है। इस वेद मार्ग पर चलने से ही मोक्ष मिलता है। मोक्षदायक कर्म ही श्रेष्ठ जीवन है। और सबसे महान परमात्मा है।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research e-Journal

➢ मनुष्यका दुष्ट कर्म:

मनुष्य मन, वाणी और शरीर से दुष्ट कर्म करता है।

(अ) मानस कर्म तिन प्रकार के है।- दुसरे के धन हरण का चिन्तन, अनिष्ट चिन्तन , वह मिथ्या विश्वास कि परलोक कुछ नहीं है।

(ब) वाणी के पाप चार प्रकार के है।- कठोर बोलना, मिथ्या बोलना, चुगली करना और निष्प्रयोजन बोलना।

(क) शरीर के पाप तीन प्रकार के है। – बिना आज्ञा दुसरे का धन हरण, हिंसा और पर-स्त्री गमन।

मन से किए शुभ-अशुभ कर्म का फल मन से, वाणी से किए का वाणी से शरीर से किए शरीर से फल मिलता है। शरीर से किए कर्म दोषों से मनुष्य स्थावर योनी ,वाणी से किए कर्मो पशु-पक्षी योनी और मन से किए पापो से नीच योनी को प्राप्त होता है। वाणी का दण्ड, मनका दण्ड, शरीर का दण्ड जिसकी बुद्धि में स्थित हे उसे त्रिदंडी कहते है।

मनुष्य इन तीन दण्डो को सब जीवो के विषय में लगाकर काम, क्रोध को रोककर सिद्धि प्राप्त करता है। इस शरीर का जो प्रवर्तक हे उसे क्षेत्रज्ञ कहते है। और जो कर्म करता है उसे बुद्धिमान भूतात्मा कहते है। एक अंतरात्मा जीव नाम का है जो देहधारियों का स्वाभाउस परमात्मा के नियमो विक साथी है जिससे जन्मो में सुख-दुःख का अनुभव होता है। यह दोनों महान और क्षेत्रज्ञ पंचभूतो के साथ मिले हुए ऊँच-नीच सब प्रकार के प्राणियों में स्थित में उस परमात्मा के आश्रय रहते है। उस परमात्मा के नियम अनुसार असंख्य प्राणी हे जो निरंतर चेष्टा कर रहे है। मरने के पीछे पापियों के लिए नरक की यातना भोगने के लिए पंचमहाभूतो की पंचतन्मात्रा से एक अन्य दृढ शरीर उत्पन्न होता है। वह विषयासक्ति से उत्पन्न हुए दुःख फल वाले पापो को भोगकर उसके बाद पाप से छुटा हुआ फिर उन दोनों से युक्त या जीव इस लोक और परलोक में सुख प्राप्त करता है। यह यातनाए भोगकर पाप से दूर हुआ, फिर उन्ही पंच तत्वों को प्राप्त होता है। इस जीव को कर्म और अधर्म से प्राप्त इन गतियो को अपने चित में देखकर मन को सदा धर्म में लगाए। सत्व, रजस, तमस, यह तिन मनुष्य के गुणों को जानसे वह सरे भावो में पूर्णत: व्याप्त हो स्थित है।

➢ मनुष्यका त्रिगुणातमक विचार:

मनुष्य सत्व, रजस, तमस तिन गुणो को अपने जीवन अलग अलग स्थिति में व्यक्त करता है। सत्व का लक्षण ज्ञान है, रजस का राग द्वेषऔर तमस का आज्ञा। जब मनुष्य अपने अन्दर सुख, गहरी शांति, शुद्ध प्रकाश का कुछ अनुभव करे, उसे सत्व स्थिति जाने। जब दुःख से युक्त और आत्मा में संतोष का अनुभव न हो उसे रजस की स्थिति जाने। इसे रोकना कठिन और देहधारी सदा विषय की और खिंचता है। जो संवेदन भूल युक्त, अस्फुट, तर्क से निश्चित न हो, बाह्य और अभ्यंतर इन्द्रियों से निश्चित न हो , उसे

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research e-Journal

तम की स्थिति जाने।

वेद का अभ्यास ताप, ज्ञान शौच, इन्द्रिय-संयम धर्म का अनुष्ठान, आत्म विचार- यह सत्व गुण के चिन्ह है। कामना से कर्मो में रूचि, धीरज न होना, निषिद्ध कर्मो को स्वीकारना, लगातार विषयों की सेवा- यह रजोगुण के चिन्ह है। लोभ, निंद्रा, कायरता, क्रूरता, नास्तिकता, आचार त्याग और प्रमाद यह तमोगुण के लक्षण है।

(अ) त्रिगुणातम की विशेषता:

जिस कर्म करने के पीछे करते हुए व् करने के समय लज्जा आती है। वह तमोगुण का स्वरुप है। जिस कर्म से इस लोक में बड़ी स्थिति चाहता है, और असिद्धि में शोक नहीं करता है। वह रजोगुण है, जब किसी विषय को पुरे रूप से जानना चाहता है, जिसका आचरण करता हुआ लज्जा का अनुभव नहीं करता, जिससे आत्मा प्रसन्न हो, वह सत्व का लक्षण है। सत्व का लक्षण धर्म, रजस का लक्षण अर्थ, तमस का लक्षण काम है। इनमे से अगला श्रेष्ठ है।

(ब)त्रिगुणातम से विभिन्न योनियाँ धारण करना:

सत्व, रजस और तमस से प्राप्त विभिन्न योनिया इस प्रकार है।

तपस्वी, यति, ब्राह्मण, विमानों पर विचरने वाले, नक्षत्र और दैत्य- यह अधम सत्वगुणी है। यज्ञ करने वाले, ऋषि, देवता, वेद, ज्योति, वत्सर, पितर और साध्य- यह दूसरी सत्वगुणी गति है। ब्रह्मा, विश्व के रचने वाले, धर्म, महान, अव्यक्त- इसे बुद्धिमान उतम सत्वगुणी गति कहते है।

झल्ल, मल्ल, नत, और खोटी जीविका के पुरुष, जुआ और मधपान के व्यसनी –यह अधम रजोगुणी है। राजा, क्षत्रिय, राजाओ के पुरोहित और वाद-विवाद के प्यारे- यह मध्य रजोगुणी है। गन्धर्व, गृह्यक, यक्ष और जो देवताओ के अनुचर है तथा सारी अपसराए-यह उतम रजोगुणी है।

वृक्ष-पोधे, भूमि-किट, मछली, कछुआ, रेगने वाले साप इत्यादि, पशु और मृग- यह अधम तमोगुणी है। हाथी, घोडा, शुद्र, निन्दित म्लेच्छ, सिंह, बाध, सूअर, यह माध्यम तमोगुणी है। चारण, सुवर्ण, दंभी पुरुष, राक्षस, पिशाच- यह उतम तमोगुणी है।

कायिक, वाचिक, मानसिक की सब जीवो से सबंध रखने वाली तीन-तीन प्रकार की गतिका विवरण है।

- पाप

मनुष्य जैसा पाप करते उसे वैसी योनी में जन्म धारण करना पड़ता है। इन्द्रियों में लगाव से, धर्म पर न चलने से, मुर्ख अधम पुरुष पाप योनियों को प्राप्त होते है। महापातकी पुरुष बहुत वर्ष समूह, घोर नरको में पडकर उनके क्षय से इन जन्मो को प्राप्त होते है। ब्रह्म हत्या करनेवाला सूअर, कुता, गधा, ऊंट, गौ, बकरी, मृग, पक्षी, चंडाल, और पुक्कस की योनी को प्राप्त होता है। सूरा पिनेवाला ब्राह्मण कृमि, किट, पतंग, मैला खाने वाले पक्षी और हिस्त्र जीवो की योनी को प्राप्त होता है। सोना चुराने वाला ब्राह्मण, मकड़ी, साप, गिरगिट, जलचर तिर्यक योनिया राक्षस और पिशाचो के जन्मो को हजार बार प्राप्त होता है। गुरु स्त्री गामी

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research e-Journal

पुरुष घास, झाडी,बेल, कच्चा मांस खाने वाले गिद्ध आदि दाढो वाले क्रूर कर्म करने वालो की योनी को सैंकडो बार प्राप्त होता है। हिसक-जन कच्चा मांस खानेवाले बनते है। अभक्ष्य के खाने वाले कृमि, चोर आपस में एक-दुसरे को खाने वाले जंतु बनते है। अन्त्यज स्त्रियों के सेवन वाले प्रेत बनते है। जितना समय पतितो के साथ संयोग से पतित होता है उतना समय पतितो के साथ संयोग प्राप्त कर, दुसरे की स्त्री से संभोग करके तथा ब्राहमण का धन चुराकर ब्रहम राक्षस होता है।

कोई भी वस्तु चुराकर मनुष्य तिर्यक योनी को प्राप्त होता है और होम से पहले हावी को खाकर भी इसी योनी को प्राप्त होता है। यह निषिद्ध के अनुष्ठान का फल कहा है।

- विहित कर्म न करने का फल

विहित कर्म न करने का फल अब कहते है। अपने धर्म से च्युत ब्राहमण वामन खाने वाला प्रेत होता है क्षत्रिय अमेध्य और मुर्दो के खाने वाला कटपुतन होता है। वैश्य अपने कर्म से च्युत हो पिव खाने वाला प्रेत होता है और शुद्र चैलाशक होता है। विषयों का लालची ज्यो-ज्यो विषयों का सेवन करते है, वैसे-वैसे उनमे उसकी कुशलता होती है। इन कर्मो के अभ्यास से भिन्न-भिन्न योनियों में दु:खो को प्राप्त होते है। तामिस्त्र आदि घोर नरको में और बांधने छेदने वले असिपत्रवन आदि नरक को प्राप्त होते है। बारबार गर्भ स्थान में वास, दुखप्रद जन्म, काठ की बेडीयों और लोगो के दासत्व को प्राप्त होते है। बंधुओ और प्यारो से वियोग, दुर्जन के साथ वास, धन कमाने का परिश्रम, धन का नाश, कष्ट से मित्र प्राप्ति, बिना कारण शत्रुओ का प्रकट होना- इन सरे दु:खो को प्राप्त होते है। न हटाई जाने वाली वृद्धावस्था, रोगों से पीड़ा, भांति,भांति के क्लेश और मृत्यु को प्राप्त होते है। सात्विक,राजिसक,तामसिक जिस-जिस भाव से जिस-जिस कर्म का सेवन करता है, वैसे-वैसे शरीर से कर्म फल भोगता है।

VIDHYAYANA

- भारतीय दर्शन में मोक्ष प्राप्तिकी विचारणा

भारतीय दर्शन में नश्वरता को दु:ख का कारण माना गया है। संसार आवागमन, जन्म-मरण और नश्वरता का केंद्र हैं। इस अविद्याकृत प्रपंच से मुक्ति पाना ही मोक्ष है। प्राय: सभी दार्शनिक प्रणालियों ने संसार के दु:ख मय स्वभाव को स्वीकार किया है और इससे मुक्त होने के लिये कर्ममार्ग या ज्ञानमार्ग का रास्ता अपनाया है। मोक्ष इस तरह के जीवन की अंतिम परिणति है। इसे पारपार्थिक मूल्य मानकर जीवन के परम उद्देश्य के रूप में स्वीकार किया गया है। मोक्ष को वस्तुसत्य के रूप में स्वीकार करना कठिन है। फलत: सभी प्रणालियों में मोक्ष की कल्पना प्राय: आत्मवादी है। अंततोगत्वा यह एक वैयक्तिक अनुभूति ही सिद्ध हो पाता है। संसार आवागमन, जन्म-मरण और नश्वरता का केंद्र हैं। इस अविद्याकृत प्रपंच से मुक्ति पाना ही मोक्ष है।

प्राय: सभी दार्शनिक प्रणालियों ने संसार के दु:ख मय स्वभाव को स्वीकार किया है और इससे मुक्त होने के लिये कर्ममार्ग या ज्ञानमार्ग का रास्ता अपनाया है। मोक्ष इस तरह के जीवन की अंतिम परिणति है।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research e-Journal

इसे पारपार्थिक मूल्य मानकर जीवन के परम उद्देश्य के रूप में स्वीकार किया गया है। मोक्ष को वस्तुसत्य के रूप में स्वीकार करना कठिन है। फलत: सभी प्रणालियों में मोक्ष की कल्पना प्राय: आत्मवादी है। अंततोगत्वा यह एक वैयक्तिक अनुभूति ही सिद्ध हो पाता है।

यद्यपि विभिन्न प्रणालियों ने अपनी-अपनी ज्ञानमीमांसा के अनुसार मोक्ष की अलग अलग कल्पना की है, तथापि अज्ञान, दु:ख से मुक्त हो सकता है। इसे जीवनमुक्ति कहेंगे। किंतु कुछ प्रणालियाँ, जिनमें न्याय, वैशेषिक एवं विशिष्टाद्वैत उल्लेखनीय हैं; जीवनमुक्ति की संभावना को अस्वीकार करते हैं। दूसरे रूप को "विदेहमुक्ति" कहते हैं। जिसके सुख-दु:ख के भावों का विनाश हो गया हो, वह देह त्यागने के बाद आवागमन के चक्र से सर्वदा के लिये मुक्त हो जाता है। उसे निग्रहवादी मार्ग का अनुसरण करना पड़ता है। उपनिषदों में आनंद की स्थिति को ही मोक्ष की स्थिति कहा गया है, क्योंकि आनंद में सारे द्वंद्वों का विलय हो जाता है। यह अद्वैतानुभूति की स्थिति है। इसी जीवन में इसे अनुभव किया जा सकता है।

वेदांत में मुमुक्षु को श्रवण, मनन एवं निधिध्यासन, ये तीन प्रकार की मानसिक क्रियाएँ करनी पड़ती हैं। इस प्रक्रिया में नानात्व, का, जो अविद्याकृत है, विनाश होता है और आत्मा, जो ब्रह्मस्वरूप है, उसका साक्षात्कार होता है। मुमुक्षु "तत्वमसि" से "अहंब्रह्यास्मि" की ओर बढ़ता है। यहाँ आत्मसाक्षात्कार को हो मोक्ष माना गया है। वेदांत में यह स्थिति जीवनमुक्ति की स्थिति है। मृत्यूपरांत वह ब्रह्म में विलीन हो जाता है। ईश्वरवाद में ईश्वर का सान्निध्य ही मोक्ष है। अन्य दूसरे वादों में संसार से मुक्ति ही मोक्ष है। लोकायत में मोक्ष को अस्वीकार किया गया है। इस देह में रह कर संसार का कोई भी धर्म निभाया जा सकता है। देह से भागी हुई आत्मा शून्य में विलीन हो सकती है, मानवता के प्रति क्या कर सकती है, कुछ नहीं। न जाने कितने करोड वर्षों में बनी पृथ्वी, इतने ही वर्षों बाद जीवन का अस्तित्व आयान जाने कितने तरह के जीवों की निर्मिति हुई, कितने विकास क्रमों के पश्चात मानव बना। क्या इसलिये कि इस प्रकृति के विकास को माया मोह नाम देकर पलायन कर लिया जाए संसार से? धर्म कोई बुरा नहीं, त्याग और तपस्या महान है।

वैराग्य भी मानवता का एक उत्तम स्वरूप है। किन्तु मृत्यु जो कि हर रूप में मृत्यु है उसे क्या महीनों भूखे प्यासे रह कर मोक्ष की कामना में निर्वाण में बदला जा सकता है? मृत्यु का यह महोत्सव किसी धर्म पर अंगुली नहीं उठाता, श्रध्दा जगाता है। किन्तु साथ ही बहुत गहरे उतर कर सोचा जाए तो ऐसी मृत्यु की कामना मात्र ही पलायन प्रतीत होती है। आत्महत्या और इस मोक्ष की कामना में बडा बारीक अन्तर है। दु:खों, अभावों से परेशान होकर मानव मृत्यु वरण करे तो वह आत्महत्या है, इन्हीं दु:खों के जाल को काट कर वैराग्य लेकर व्रतों, तपस्याओं और समाधि लेकर प्राप्त की गई मृत्यु पूजनीय है और निर्वाण के बाद मोक्ष प्राप्ति का साधन है। तो फिर किसी अति जर्जर, बीमार या वर्षों से कोमा में पडे, या व्याधि की अंतिम अवस्था में तडपते किसी व्यक्ति के लिये मर्सी डेथ को कई देशों सहित भारत में भी मान्यता क्यों नहीं दी गई है,इसकी कुछ वजह है, एक तो इसके दुरूपयोग की संभावना है, दूसरे प्रकृतिप्रदत्त जीवन को नष्ट करने का अधिकार मानव को नहीं। जीवन की तरह मृत्यु भी प्राकृतिक होनी चाहिये।

- मोक्ष प्राप्ति की गतियाँ

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research e-Journal

मोक्ष प्राप्ति की चार गतियाँ जानना आवश्यक है। क्योंकि धर्मग्रंथों में जीव की ८४लाख योनियां बताई गई हैं। जीव जब तक मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो जाती, तब तक इन्हीं ८४लाख योनियों में भटकता रहता है।

- **नरक गति :**

  जीवन में किए गए अपने बुरे कर्मों के कारण जीव नरक गति प्राप्त करता है। इस पृथ्वी के नीचे सात नरक हैं, जिनमें जीव को अपनी आयुपर्यंत घनघोर दुखों को सहन करना पड़ता है।

(२) तिर्यंच गति :

जीव को अपने कर्मानुसार जो दूसरी गति प्राप्त होती है वह है तिर्यंच गति। अत्यधिक आरंभ परिग्रह, चार कषाय अर्थात क्रोध, मान, माया, लोभ एवं पांच पापों अर्थात हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील एवं परिग्रह में निमग्न रहने वाले जीव को तिर्यंच गति अर्थात वनस्पति से लेकर समस्त जीव जाति तथा गाय, भैंस, हाथी, घोड़ा, पक्षी आदि गति प्राप्त होती है।

(३) मनुष्य गति :

तीसरी गति मनुष्य गति होती है। जो जीव कम से कम पाप करता हुआ निरंतर धर्म-ध्यान में व्यतीत करता है। उसे मनुष्य गति प्राप्त होती है। समुद्र में फेंके गए मोती को जैसे प्राप्त करना दुर्लभ है, उसी प्रकार यह मानव जीवन भी महादुर्लभ है, जिसको पाने के लिए देवता भी तरसते हैं।

(४) देव गति :

चौथी गति देव गति होती है। इस पृथ्वी के ऊपर १७स्वर्ग हैं। जीव अपने कर्मानुसार उन स्वर्गों में कम या अधिक आयु प्रमाण के लिए जा सकता है। इसको पाना अत्यंत ही दुष्कर है। निरंतर निःस्वार्थ भाव से स्वहित एवं परहित साधने वाला जीव ही देव गति की उच्चतम अवस्था को प्राप्त करता है।

इस प्रकार उपरोक्त चारों गतियों से अर्थात ८४लाख योनियों से छुटकारा पाकर ही जीव मोक्ष प्राप्ति कर सकता है अन्यथा नहीं। अतः मानव को इस जीवन में हमेशा पाप कार्यों से निवृत्त रहकर तथा धर्म एवं सद्कर्मों में प्रवृत्त रहकर मोक्ष नहीं तो कम से कम सद्गतियों अर्थात देवगति एवं मनुष्य गति में अगला जन्म हो, ऐसे कार्य करना चाहिए। जीवन, मरण, लोक, परलोक, स्वर्ग और नरक आदि गूढ़ विषय यदि सद्साहित्य में तलाशें तो इनके लिए कोई समान सार्वत्रिक नियम नहीं है। परन्तु प्रत्येक जीव की स्व कर्मानुसार विभिन्न गति होती है, यही कर्मविपाक का सर्वतंत्र सिद्धांत है। सार यह निकलता है जीव कि कर्मानुसार स्वर्ग और नरक आदि लोकों को भोगकर पुनरपि मृत्युलोक में जन्म धारण करे और दूसरे जिसमें प्राणी जीवत्व भाव से छूटकर जन्म मरण के प्रपंच से सदा के लिए उन्मुक्त हो जाए। वेदादि शास्त्रों में उक्त दोनों गतियों को कई नामों से जाना गया है। श्रीमद् भगवद् गीता के अनुसार देव, मनुष्य आदि

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research e-Journal

प्राणियों की मृत्यु के अनन्तर दो गतियाँ होती है। इस जंगम जगत के प्राणियों की अग्नि, ज्योति, दिन, शुक्ल पक्ष और उत्तरायण से उपलक्षित अपुनरावृत्ति-फलक प्रथम गति तथा धूम, रात्रि, कृष्णपक्ष और दक्षिणायन से उपलक्षित पुनरावृत्ति-फलक दूसरी गति अनादि काल से चली आ रही है। इसमें दूसरे मार्ग से प्रयाण करने वाला प्राणी कर्मानुसार पुनः जन्म मरण के चक्र में पड़कर आलोक-ब्रह्मलोक परिभ्रमण करता रहता है, परन्तु प्रथम मार्ग से प्रयाण करने वाला जीव सूर्यमण्डल भेदन करके सर्वदा के लिए जन्म और मरण के बन्धन से छूट जाता है, अर्थात् मोक्ष को प्राप्त हो जाता है।

➢ मोक्ष प्राप्ति के दस साधन

१. मौन अर्थात् इन्द्रियजीत होकर वाणी का संयम कर ले। वाणी का प्रयोग कभी सांसारिक कार्यों में ना करें।
२. ब्रह्मचर्य व्रत अर्थात् ब्रह्मचर्य का विधिवत् पालन करें। श्रुति कहती है कि केवल ब्रह्मचर्य व्रत से ही जीव की मुक्ति हो जाती है।
३. शास्त्र श्रवण निरन्तर करते रहें और श्रवण के पश्चात् उसका सतत् मनन और निदिध्यासन चलता रहे तो भी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है।
४. तप अर्थात् तपस्या से अहं मिटता है, तपस्या की उत्तरोत्तर वृद्धि से ब्राह्मी स्थिति को जीव प्राप्त होता है अर्थात् बह्म में लीन हो जाता है।
५. अध्ययन अर्थात् बुद्धि का व्यायाम। निरन्तर शास्त्र अध्ययन और तद्नुसार उसका चिन्तन-मनन जीव को ब्रह्मावगामिनी बनाता है। भगवद् गीता के अनुसार भी बुद्धि के समीप ही तो ब्रह्म है।
६. स्वधर्म पालन अर्थात् जिस वर्ण के हों, जिस मत के हों, जिस आश्रम आदि के हों, धर्म का पालन करते रहें- यह भी मोक्ष का मार्ग है।
७. शास्त्रों की व्याख्या अर्थात् शास्त्रों की प्रबल युक्तियों द्वारा युक्तियुक्त व्याख्या करें। यह भी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है। व्याख्या करते समय बुद्धि अत्यन्त सूक्ष्म हो जाती है और ब्रह्म में लीन हो जाती है।
८. एकान्तवास अर्थात् संसारी कोलाहल और चकाचौंध से दूर। एकान्तवास का अर्थ अपने दायित्वों से भागकर पर्वत, जंगल, आश्रम आदि में भाग जाना कदापि नहीं है। तो सूक्ष्माति सूक्ष्म है । स्थूल बुद्धि वाले तो स्थूल शरीर ही पा सकते है।
९. जप अर्थात् निरन्तर नाम मंत्र जप वाला भी मोक्ष को प्राप्त होता है। मंत्र जाप की महिमा का इससे बड़ा कोई उदाहरण हो ही नहीं सकता, जो शिव जी ने पार्वती जी से "है वरानने पार्वती मैं तीन बार प्रतिज्ञा करके कहता हूं कि केवल जप मात्र से ही इष्ट कार्य की सिद्धि हो जाती है।" अब यह बात निर्भर करती है अपने-अपने बुद्धि और विवेक पर कि व्यक्ति भौतिक सुखों की चाह है या इससे विमुख होकर पारलौकिक सुखों की।
१०. समाधि भी मुक्ति का एक निमित्त बताया है। शास्त्रकारो ने आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research e-Journal

और अन्ततः समाधि इन छः को योग शास्त्रों में षड़ंग योग कहते हैं। इनमें प्रथम तीन तो बाह्य साधना और अन्तिम तीन-धारणा, ध्यान और समाधि आन्तरिक साधन कहलाते हैं।

समाधि से मन एकाग्र होता है परन्तु साथ में मन निर्मल होना परम आवश्यक है, नही तो पुनः जीव भौतिक वाद में पहुँच जाएगा। जब शरीर में मल न रहकर निर्मल बन जाए, मन में विक्षेप न होकर बिना विक्षेप के बन जाए और बुद्धि का आवरण हटकर निरावरण बन जाए तो समाधि से मोक्ष की अवस्था प्राप्त हो जाती है।

➢ मोक्षदायक कर्मे- आत्मज्ञान सर्वोतम:

मोक्षदायक कर्म अब कहते है। वेद का अभ्यास तप, ज्ञान,इन्द्रिय संयम, अहिंसक और गुरु सेवा -यह उत्तम मोक्ष साधन है। इन सब में से कोई भी शुभ कर्म करे, बहुत ही कल्याणकारी होता है। इन सब में से आत्म-ज्ञान मुख्य मन गया है। यह सब विध्याओ में उतम है। इसीसे अमृत प्राप्त होता है। यह छः कर्म इहलोक और परलोक के लिए कल्याणकारी है। वैदिक कर्म दो प्रकार के है, प्रवृति रुप और निवृति रूप। प्रवृति रूप सुख -स्वर्ग का साधन और निवृति रूप मोक्ष का साधन है।

इहलोक व् परलोक की कामना के लिए किया कर्म प्रवृति कर्म और ज्ञान-पूर्वक निष्काम कर्म निवृति कर्म कहा गया है। प्रवृति कर्म से देवताओ की समता को और निवृति कर्म से पंचभूतो को लांध कर मोक्ष पद प्राप्त करता है। सब भूतो में आत्मा को और आत्मा में सब भूतो को देखता हुआ स्वाराज्य को प्राप्त होता है। अन्य कर्म त्याग का द्रिजोतम आत्म-ज्ञान, शम और वेदाभ्यास में प्रत्नशील हो। यही जन्म की सफलता है, विशेषत: द्विग के लिए। मानवशास्त्र का रहस्य अब कहते है। मर्यादाओ के सम्बन्ध में यदि संशय हो तो जो वहा शिष्ट ब्राह्मण कहे, वही मर्यादा जाननी चाहिए। जिन्होंने मर्यादा अनुसार परिवहण समेत वेद को पढा है और जो श्रुति को प्रत्यक्ष रूप से जानते है- व्ही शिष्ट ब्राह्मण जानने चाहिए। कम-से कम दस को परिषद जो सदाचार में स्थित हे, वः जो धर्म नियत करे उससे विचलित न हो। ऋक, यजु साम के जानने वाले तीन पुरुष एक नैयायिक, एक मीमांसक, एक नैरुकत, एक धर्मशास्त्री , और ब्रह्मचारी, गृहस्थ, और वानप्रस्थ तीन आश्रम वाले, यह दशावरा परिषद है। सब प्रकार के धर्म विषयक संशय मिटाने के लिए ऋग्वेद, यजुवेद, सामवेद प्रत्येक का जानने वाला यह त्र्यवरा परिषद कही जाती है। चारो वेदों को जानने वाला एक भी द्विजोतम जिस धर्म का निश्चय करे, व्ही उत्तम धर्म जानना चाहिए, न की सहस्त्र अविद्धवानो का कहा हुआ। व्रत से हिन्, वेद के न जानने वाले, तमोगुणी मुर्ख जो कहते, वह सौ गुण पाप बनकर उस तथाकथित धर्म के बतलाने वालो को प्राप्त होता है। उनको नाशक होता है। इस मोक्ष साधन का पालन करता हुआ विप्र परम गति को प्राप्त होता है।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research e-Journal

➢ मनुष्य का परमात्मा के साथ सबंध:

यह नितांत सत्य है कि सभी **जीवधारियों का भौतिक अस्तित्व पदार्थमूलक** है, अर्थात् उनके अस्तित्व की अनुभूति उनके दृश्य या स्पृश्य शरीर के माध्यम से ही होती है । क्या इस भौतिक शरीर से परे भी कोई ऐसी सत्ता है जो जीव के निर्जीव पदार्थों से भेद का आधार हो ? क्या कुछ ऐसा है जो जीव के दैहिक नाश के बाद भी बचा रहता है, जो स्वयं नष्ट नहीं होता है ? अनादि काल से मनुष्य इन प्रश्नों के उत्तर खोजता आ रहा है ।

आधुनिक वैज्ञानिक युग में अनेक विज्ञानी, किंतु सभी नहीं, इस मत के हैं कि निर्जीव पदार्थ ही विशिष्ट **भौतिक संरचना** ग्रहण करते हुए विशेष **रासायनिक प्रक्रियाओं** के अधीन सजीव रूप धारण कर लेता है । उसकी 'मृत्यु' के साथ ही उसके भौतिक ढांचे का आधार 'पदार्थ' अपने मूल अवयवों से जा मिलता है और शेष कुछ भी नहीं बचता। अर्थात् उनके मतानुसार देहावसान के बाद 'अनश्वर' प्रकृति की कोई सत्ता सृष्टि में नहीं बची रह जाती है। इस धारणा के विपरीत शरीर से परे 'आत्मा' या तत्सदृश 'अविनाशी' कोई सत्ता बची रहती है ऐसी धारणा प्रचलित प्रायः सभी दर्शनों में देखने को मिलती है । **वैदिक दर्शन में जीवधारी भौतिक पदार्थ और 'आत्मा' के संयोग का परिणाम है।** यह आत्मा स्वयं सर्वव्यापी अशरीरी परमात्मा का अंश है, लेकिन उससे विभक्त अलग अस्तित्व धारण किये रहती है । अपने मूल 'परमात्म' तत्व में उसके विलय को मोक्ष कहा गया है ।

माण्डूक्य' उपनिषद् में शरीर, आत्मा, तथा परमात्मा को क्रमशः घट (घड़ा), उसके भीतर सीमा बद्ध आकाश, और बाहर अनंत तक फैले आकाश से तुलना के माध्यम से समझाया गया है । गुरु द्वारा अपने जिज्ञासु शिष्य के समक्ष कही गयी बात अधोलिखित दो श्लोकों में अभिव्यक्त है:

आत्मा ह्याकाशवज्जीवैर्घटाकाशैरिवोदितः ।
घटादिवच्च संघातैर्जातावेतन्निदर्शनम् ।।
घटादीषु प्रलीनेषु घटाकाशादयो यथा ।
आकाशे प्रलीयन्ते तद्वज्जीवा इहात्मनि ।।

(माण्डूक्योपनिषद्, अद्वैतप्रकरण, श्लोक ३ एवं ४)

जिनकी सम्मिलित व्याख्या कुछ इस प्रकार की जा सकती है: जिस प्रकार घड़ों के निर्माण पर आकाश विभक्त हो जाता है और उसके अलग-अलग भाग उन घड़ों के अंदर सीमित हो जाते हैं और ऐसा प्रतीत होने लगता है जैसे कि उनके भीतर का रिक्त स्थान बाहर के विस्तृत आकाश से भिन्न है, उसी प्रकार **आत्मा (परमात्मा)** पदार्थों के मिलन से जीव रूपों में प्रकट होता है । और घड़ों के टूटकर बिखर जाने पर जैसे उनके भीतर समाये हुए आकाशीय क्षेत्रों का बाह्याकाश से भेद मिट जाता है और वे पुनः बाह्याकाश के साथ एकाकार हो जाते हैं, ठीक वैसे ही **जीवात्मा**एं पदार्थों के संयोग से विमुक्त होकर परम आत्मा में विलीन हो जाते हैं ।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research e-Journal

यहां यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि वैदिक दर्शन में यह अवधारणा प्रचलित है कि जीवधारी के दो प्रकार के शरीर होते हैं, एक **'स्थूल शरीर'** और दूसरा **'लिंग देह'** या **'सूक्ष्म शरीर'** । हमें जीवधारी के अस्तित्व का भान उसके स्थूल शरीर के माध्यम से होता है । यही शरीर है जिसे वह मृत्यु के समय त्यागता है । मान्यता है कि वह तब भी प्रकृति से सूक्ष्म शरीर के माध्यम से बंधा रहता है । इस सूक्ष्म शरीर में **पंचमहाभूत ('क्षिति जल पावक गगन समीरा' अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश एवं वायु)** सूक्ष्म रूप से विद्यमान रहते हैं; मृत्यु पश्चात् इसी का 'प्रेत' रूप में संसार के साथ बंधन बना रहता है; और इसी में जीव के संस्कार संचित रहते हैं । वस्तुतः घटाकाश की जो तुलना यहां प्रस्तुत है वह इस सूक्ष्म शरीर से संबंधित है, न कि स्थूल शरीर से। यह सूक्ष्म शरीर जन्म-मृत्यु के चक्र में उलझा रहता है और मोक्ष की अवस्था में आत्मा इससे बंधन तोड़कर परमात्मा में प्रलीन हो जाती है ।

➢ निष्कर्ष:

इस शोध पत्र से जानना मिलता हे की परमात्मा ही सबसे बड़ा देवता है, सब उसी में स्थित है, वह वही सब देह धारियों के लिए कर्म भोग की रचना करता है। इस वेद मार्ग पर चलने से ही मोक्ष मिलता है। सबके शासन करने वाले, सूक्ष्म से भी सूक्ष्म, ज्योतिमय, केवल समाधि ज्ञान से जानने योग्य, उस परम पुरुष को जान । इसे कई अग्नि कहते है, दुसरे प्रजापति, कई इन्द्र, दुसरे प्राण, कई सनातन ब्रह्म कहते है। वः परमात्मा सब प्राणियों को पंचभूतो के साथ संयुक्त कर जन्म, वृद्धि और नाश द्वारा सदा चक्रवत घूमता है। इस प्रकार जो आत्मा से परमात्मा को सब भूतो में देखता है, वह सबकी समता को प्राप्त हो ब्रह्म को प्राप्त होता है, जो सबसे ऊँचा पद है।

➢ संदर्भ ग्रंथ:

१. **Hindi. Webdunia.com.**
२. **https://hi.wikipedia.org**
३. **भारतीय नीतिदर्शन. शुकदेव शास्त्री- हंसा प्रकाशन - जयपुर.**
४. **नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता - डॉ. सुरेन्दसिंह नेगी - आदित्य पब्लिकेशन - मध्य प्रदेश.**
५. **भारतीय नीतिशास्त्र - डॉ. दिवाकर पाठक - बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी - पटना.**
६. **मानव कल्याण का राजमार्ग - संत हरवंश सिंह निर्मल - पोस्ट श्री भादरियाणी - राजस्थान**
७. **निति मज्जरी - डॉ. जितेन्द्रकुमार तिवारी - प्रतिभा प्रकाशन - दिल्ली.**
८. **नैतिक जीवन और नैतिक उत्कर्ष - डॉ. के. के नाणावटी - एम. सी. कोठारी - बरोडा.**